RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-12
December -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

समकालीन साहित्य में कृषि और ग्रामीण जीवन

एकता देवी

सहायक आचार्य (हिंदी), संघवी मातुश्री पूरीबाई भूरमल जैन राजकीय महाविद्यालय, शिवगंज (सिरोही)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Dec 2019

Keywords
समृद्धि, विकास, ग्रामीण सभ्यता, कृषि, ग्रामीण जीवन

***Corresponding Author**
Email: aktad2711@gmail.com

ABSTRACT

भारत गाँवों का देश है | भारत की समृद्धि और विकास के विविध सोपानों में ग्रामीण सभ्यता का काल सर्वाधिक लम्बा रहा है | हजारों सालों में विकसित ग्रामीण सभ्यता के आस-पास समृद्ध साहित्य की रचना हुई | यह साहित्य कल्पना की उड़ान लेकर साहित्यकार के हृदय की अनुभूतियों से नि:सृत हुआ | साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं बल्कि दीपक भी है |वह दर्पण की भांति यथार्थ को बताता हुआ दीपक की भांति समाज के लिए प्रकाश भी फैलाता है | हिंदी साहित्य के सभी युगों में ग्रामीण जीवन का युग बोध हुआ है | वैदिक सभ्यता से ही हमें कृषि और ग्रामीण जीवन का पता चलता है | समकालीन साहित्य तो भारत की कृषि, ग्रामीण संस्कृति और सभ्यता की चेतना को समग्र रूप में प्रस्तुत करता है | भारत के ग्रामीण जीवन और कृषि के प्रति समकालीन साहित्यकार बहुत सजग दिखायी देता है |

प्रस्तावना :-

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है | 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की 68.84% आबादी गाँवों में निवास करती है और कुल आबादी में से लगभग 61.5% आबादी कृषि पर निर्भर करती है | भारत कृषि प्रधान देश है | मानव सभ्यता के विकास में कृषि की अमूल्य भूमिका रही है | मानव अस्तित्व ही कृषि पर टिका रहा | कृषि ने हमें संस्कारित बनाया | भारतेंदु हरिशचंद्र का कथन है-'भारत का स्वत्व और आत्मा गाँव है |' उनके इस कथन से यह पता चलता है कि ग्रामीण जीवन हमेशा से ही साहित्य का केंद्र रहा है | जब हम हमारे देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन करते हैं तो हमें उस संस्कृति और सभ्यता को जानने के लिए ग्रामीण जीवन के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है | जब ग्रामीण जीवन का अध्ययन करते है तो फिर भला कृषि और कृषक कैसे नजरअंदाज किये जा सकते हैं | उनके बिना तो ग्रामीण जीवन का अध्ययन करना एक असंभव का काम नजर आता है | हिंदी साहित्य में आदिकाल से पहले वैदिक युग से ही ग्रामीण जीवन को अपनी के माध्यम से महाकवि भारवि, माघ ने पन्नों पर उकेरा है | हजारों वर्षों से भारत का ग्रामीण जीवन और कृषि समाज का केन्द्रीय भाव है | विश्व साहित्य के पन्नों से मेसोपोटामिया, मिश्र जैसी सभ्यताएं मिट गई है लेकिन हमारे भारत की संस्कृति उसके साहित्य में ग्रामीण जीवन के स्वरुप में आज भी जीवित है | भक्तिकाल के कवि तुलसीदास ने भी अपनी रचना कवितावली में कृषि और किसान की तत्कालीन स्थिति के बारे में बताते हुए कहा है कि-

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली |
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ||

साहित्य समीक्षकों के अनुसार हमें हमारे अपूर्व साहित्य के माध्यम से ही कृषि प्रधान समाज, यथार्थ ग्रामीण जीवन, जाति प्रथा, महाजनी सभ्यता, सामंतवादी व्यवस्था, रुढ़िवादी की गहरी समझ देखने को मिलती है | 1857 की क्रांति के साथ ही साहित्य में एक नवीन युग का आरंभ हुआ | सबसे बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि अब तक अभिव्यक्ति का जो स्वरुप केवल पद्य तक सीमित था अब वह स्वरुप पद्य के साथ गद्य भी हो गया | पद्य के साथ गद्य की अनेक नई विधाएँ विकसित हो गयी जैसे उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध आदि | इन सभी विधाओं में कृषि, किसान उसकी समस्याएं ग्रामीण जीवन, लोगों का रहन-सहन, पहनावा, त्यौहार आदि के बारे में प्रमुखता से लिखा गया |

उपन्यास साहित्य में ग्रामीण जीवन और कृषि :-

प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'गोदान' कृषि किसान एवं ग्रामीण जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया है | यह उपन्यास ग्रामीण जीवन और कृषक जीवन का महाकाव्य है | प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में ग्रामीण जीवन और कृषि एवं कृषक जीवन के विविध पक्षों का चित्रण हुआ है | किसान भारत की ग्रामीण व्यवस्था और कृषि संस्कृति का मूल आधार है | किसान जीवन के साथ तालमेल बनाते हुए प्रेमचंद ने जो रचा वह हिंदी के लिए एकदम नया था, उन्होंने उस धड़कन को सुना जो करोड़ों किसानों के दिल में हो रही थी | उन्होंने उस अछूते यथार्थ को अपना कथा विषय बनाया, जिसे भरपूर निगाह देखने का हियाव ही बड़ो

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बड़ो को न हुआ था |(1) 1947 से पहले भारत की अर्थव्यवस्था, धर्म व्यवस्था, समाज व्यवस्था बनाने में ग्रामीण जीवन और कृषि की भूमिका आज की अपेक्षा ज्यादा बड़ी थी | इन गाँवों में रहने वाली सारी की सारी आबादी खेती पर आश्रित थी | गाँवों में रहने वाले सभी लोग किसान तो नहीं थे लेकिन सभी लोग जीवन यापन के लिए आश्रित खेती पर ही थे | गाँव में रहने वाली आबादी की पहचान वर्गों में बाँटकर की जा सकती है | कृषि और व्यापार से जुड़े वर्गों के अंतर पर विचार करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते है,"भूमि ही यहाँ पर सरकारी आय का प्रधान उद्गम बना दी गयी है | व्यापार श्रेणियों को यह सुभीता विदेशी व्यापार को फलता-फूलता रखने के लिए दिया गया था, जिससे उनकी दशा उन्नत होती आयी और भूमि से संबंध रखने वाले सब वर्गों की – क्या जमींदार क्या किसान, क्या मजदूर, गिरती गयी |"(2) प्रेमचंद के ग्रामीण जीवन से संबंध रखने वाले तीन वर्ग के लोग थे – जमींदार, किसान और मजदूर | जमींदार किसान नहीं थे, मजदूर भी खेतिहर किसान थे इनके पास जमीन नहीं थी | ये दोनों वर्ग कृषि व्यवस्था और ग्रामीण व्यवस्था के अंग जरुर थे लेकिन किसान नहीं थे | प्रेमचंद का सारा ध्यान किसानों पर या जिनके पास स्वयं की अपनी चार-पांच बीघा जमीन होती थी और ये खेती से जुड़े सारे काम स्वयं करते थे | हल्कु, शंकर, होरी सभी किसान पात्र थे | प्रेमचंद के किसान की समस्या क्या है ?इसका उतर देते हुए प्रखर आलोचक रामविलास शर्मा बताते हैं कि किसान की असली समस्या ऋण की है |आज भी आजादी के इतने सालों बाद भी यह समस्या जस की तस बनी हुई है | आज भी होरी ही आत्महत्या करने के लिए विवश है | कितने ही होरी इस ऋण ग्रस्तता के कारण आत्महत्या कर रहे हैं |इसके अलावा ग्रामीण जीवन में गोबर और झुनिया के प्रेम प्रसंग को पढ़कर ऐसा लगता है कि उस समय 1936 के आस-पास सामाजिक मर्यादाओं के नाम पर हुक्का पानी बंद कर देना, जुर्माना लगाना आदि तक ही सीमित था इसके विपरीत आज तो अंतर्जातीय विवाह करने पर मृत्युदंड तक दे दिया जाता है | प्रेमचंद के अनुसार ग्रामीण समाज की बनावट का मुख्य आधार जातियाँ ही हैं | उन्होंने अपने हर ग्रामीण पत्र की जाति का स्पष्टत: उल्लेख किया है | इसके अलावा भी प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन में अनमेल विवाह, अस्पृश्यता, दहेज़ प्रथा आदि समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से उकेरा है | गोदान उपन्यास में प्रेमचंद ने ऋण समस्या के अलावा पारिवारिक संबंधों पर गहराई से विचार किया है | धनिया और उसके नेतृत्व में होरी ने गर्भवती विधवा झुनिया को आश्रय देकर गाँव के मुखिया-महाजनों के विरोध का जिस दृढ़ता से सामना किया है उसकी मिसाल प्रेमचंद साहित्य में अन्यत्र नहीं है |(3)

प्रेमचंद जी के समकालीन जयशंकर प्रसाद का 'तितली' उपन्यास भी ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा गया है | इसमें उन्होंने जमींदारों के कर्मचारियों की कूटनीति एवं धांधली,ग्रामीण जनता की सरल तथा घोर स्वार्थवृति, गाँव की राजनीति, गाँव के त्यौहार-उत्सव, सम्मिलित परिवारों की दुर्बलता आदि की झलक दिखाने का प्रयत्न किया है |(4)

शिव पूजन सहाय के देहाती दुनिया में ठेठ देहात का औपन्यासिक चित्रण है |(5) इसके संबंध में स्वयं सहाय जी लिखते हैं –"मैं ठेठ देहात का रहने वाला हूँ, जहाँ इस युग की नई सभ्यता का बहुत ही धुंधला प्रकाश पहुँचा है |वहाँ दो ही चीजे प्रत्यक्ष देखने में आती हैं, अज्ञानता का घोर अंधकार और दरिद्रता का तांडव नृत्य | वहीँ पर मैंने स्वयं जो कुछ देखा सुना है उसे यथा शक्ति ज्यों का त्यों अंकित कर दिया है |"(6) इसी युग के प्रमुख लेखक जो कवि भी थे सियाराम शरण गुप्त ने ग्रामीण जीवन से संबंधित तीन उपन्यास लिखे- 'गोद', 'नारी' और 'अंतिम आकांक्षा' | 'गोद' में गुप्त जी ने दिखाया है कि "सामाजिक विचारों की संकीर्णता किस प्रकार ग्रामीण जीवन की सरलता में विषमता उत्पन्न करती है |"(7) अंतिम आकांक्षा में ग्रामीण जीवन की अंध परम्परा, जातिभेद एवं धनी लोगों द्वारा गरीब ग्रामीणों पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध ग्रामीण पात्रों के विरोध की कहानी है तो 'नारी' में ग्रामीण जीवन में हिन्दू नारी के अदम्य स्नेह और त्याग की कहानी है |(8)इसी समय के प्रसिद्द कवि कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने भी उपन्यासों पर लेखनी चलायी है | इनके उपन्यास 'अलका' में ग्रामीण किसान आन्दोलन के बारे में बताया गया है | नागार्जुन जो प्रगतिवादी कथाकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं, ने भी ग्रामीण जीवन और कृषि से संबंधित उपन्यास लिखकर साहित्य को समृद्ध किया है | 'बलचनमा' उनका श्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास है | 'गोदान' के होरी की तरह इसमें नायक बलचनमा जो कि मजदूर वर्ग का प्रतिक है, के शोषण की ह्रदय विदारक कहानी है |(9) आंचलिक उपन्यास की रचना न केवल प्रेमचंदोत्तर युग की बल्कि पूरे हिंदी साहित्य के लिए चमत्कारी घटना थी | फनीश्वरनाथ रेणु ने बिहार के पूर्णिया जिले के छोटे से आँचल को आधार बनाकर 'मैला आँचल' उपन्यास की रचना करके हिंदी साहित्य को एक नई भेंट दी | इसके बारे में उन्होंने स्वयं लिखा है – "इसमें फूल भी है शूल भी, धूल भी है गुलाल भी, कीचड़ भी है चन्दन भी, सुन्दरता भी है कुरूपता भी | मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया |"(10) यज्ञदत्त शर्मा ग्रामीण उपन्यासों में प्रमुख स्थान रखते हैं | उनका उपन्यास 'इंसाफ' उस नाइंसाफ़ी की कहानी है जो जमींदारी उन्मूलन के समय ग्राम्य कृषकों के साथ बरती गयी थी |(11)भैरव प्रसाद गुप्त के 'गंगा मैया' में बलिया के एक गाँव के किसानों की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन हुआ है | इसमें गुप्त जी ने "नागार्जुन की तरह किसान की लाश में रूह फूंकने का काम किया है जो नई चेतना का प्रतिक है |"(12)

काव्य में ग्रामीण जीवन और कृषि :-

आधुनिक काल में पद्य साहित्य अनेक चरणों से होकर गुजरा | भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, नई कविता, समकालीन कविता आदि नामों से इसे जाना गया | छायावादी चतुष्टय में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले कवि सुमित्रानंदन पंत ने अपनी प्रगतिवादी काव्य रचना 'ग्राम्या' में भारतीय ग्रामीण जीवन के चित्र उकेरे हैं | "कृषि प्रधान देश भारत में प्रमुख समस्या ग्रामीण जन-जीवन के उद्धार की है | अत: भारतीय ग्रामों के कल्याण के लिए पंत जी ने मार्क्सवाद की उपयोगिता अनुभव की और 'ग्राम्या' को जन्म दिया |"(13) 'निराला' ने किसान जीवन और प्रतिरोध के चित्र 'नए पत्ते' में अंकित किये |(14)रामविलास शर्मा जो प्रमुख रूप से प्रखर प्रगतिवादी आलोचक भी हैं, अपनी कविताओं में ग्रामीण जन, गाँव की प्रकृति, खेत-खलियान, खेतिहर मजदूरों को बहुत ही कलात्मक ढंग से चित्रित किया है | केदारनाथ अग्रवाल में अपनी रचनाओं में गाँव की प्रकृति, खेत-खलियानों के सौन्दर्य को उभारा है –

"ज्वार खड़ी खेतों में ऊँची लहराती है ,
कहती हैं मेरे यौवन को बढ़ने देना |"

उनका काव्य किसानों की मेहनत की कमाई से निकली हुई पसीनों की बूंदों से सिंचित है | "केदारनाथ अग्रवाल समकालीन समाज में कृषक जीवन की दुरुहता को भलीभांति जानते हैं और कविता में उनका चित्रण करते हैं | समाज में उतराधिकार की प्रथा अनन्त काल से चली आ रही है और इस प्रथा से वही आनंद पाता है जो समृद्ध था, है और यह प्रथा उसे आगे भी समृद्ध रहने का वरदान देती है |लेकिन उस प्रथा में किसान जीवन की क्या स्थिति होती है उसे कवि ने बेहद मार्मिक शब्दों में अभिव्यक्त किया है |"(15)

नागार्जुन प्रगतिवादी कवि है | "गाँव के जीवन में घुसते ही प्रगतिशील कवि अपनी व्यक्तिकता भूलकर गाँव में रहने वाले तरह-तरह के लोगों को देखता है और उनका चित्र उरेहता है | अहीर की निरक्षर लड़की चंपा, भोरई केवट, प्राइमरी स्कूल के मास्टर दुखरन झा, चना-चबेना खाने वाला चंदू, चित्रकूट के बोडम यात्री वगैरह-वगैरह | इनमें से एक चित्र देखिए | यह है नागार्जुन के 'दुखरन झा' और यह है उनका स्कूल"–

'घुन खाए शहतीरों पर की, बारह खड़ी विधाता बांचे,
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर विसतुईया नाचे,
बरसा कर बेबस बच्चों पर मिनट मिनट में पांच तमाचे,
इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम के सांचे |'

इसी प्रकार मुक्तिबोध, निराला, प्रभाकर, माचवे आदि की कविताओं में ग्रामीण जीवन और कृषि के यथार्थ चित्र अंकित हुए हैं |

कहानी साहित्य में ग्रामीण जीवन और कृषि :-

अन्य विधाओं की तरह कहानी साहित्य का आरंभ भी 1900 के आस-पास माना जाता है | कहानी साहित्य अनेक पड़ावों को पार करता हुआ वर्तमान में 'नई कहानी' नामक नए आन्दोलन तक पहुँच चुका है | प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानियाँ कफ़न, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ, पंच परमेश्वर, सवा सेर गेहूँ आदि में अलग-अलग ग्रामीण संस्कृति के दर्शन होते हैं | कफ़न कहानी मजदूर वर्ग से संबंधित है तथा घीसू और माधव के जीवन की त्रासदी को चित्रित करती है | ठाकुर का कुआँ गाँवों में व्याप्त अश्पृश्यता को उघाड़कर रख देता है | सवा सेर गेहूँ में दिखाया गया है कि कैसे एक किसान सवा सेर गेहूँ का कर्ज अपने जीते जी नहीं उतार पाता है और आगे आने वाली पीढ़ियाँ भी इसको उतारने में अपनी जिंदगी हार जाती हैं | जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कहानी 'ग्राम' का यह कथा वाक्य- "यहाँ के जमींदार बहुत धर्मात्मा हैं, उन्होंने कुछ सामान्य 'कर' पर यह भूमि भी है, इसी से अब हमारी जीविका है | इतना कहते कहते स्त्री का गला अभिमान से भर आया और कुछ कह न सकी |" गाँव के अनकहे हालात और दयनीय स्थिति का परिचय देती है |(16) फनीश्वरनाथ रेणु की 'लाल पान की बेगम' कहानी भी ग्रामीण परिवेश को आधार बनाकर लिखी गयी है | नए कहानीकारों में शिव प्रसाद सिंह ने ग्रामीण आँचल को आधार बनाकर अनेक कहानियाँ लिखी हैं – आर-पार की माला, मुर्दा सराय, इन्हें भी इंतजार है | मार्कंडेय के ग्रामीण कहानी संग्रहों में महुए का पेड़, भूदान, हंसा जाये अकेला, माही आदि प्रमुख हैं | ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'जूठन' में लेखक ने ग्रामीण जीवन में व्याप्त भेदभाव, अश्पृश्यता की कई परतें एक साथ खोलकर रख दी हैं | वे गाँव के वातावरण का चित्रण करते हुए लिखते हैं "इसी जगह गाँव भर के लड़ाई झगड़े गोलमेज कांफ्रेंस की शक्ल में चर्चित होते थे | चारों तरफ गंदगी भरी होती थी | ऐसी दुर्गन्ध की मिनट भर में साँस घुट जाये | तंग गलियों में घूमते सुअर, नंग धडंग बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े, बस यह था वह वातावरण जिसमें बचपन बिता | इस माहौल में यदि वर्ण व्यवस्था को आदर्श व्यवस्था कहने वालों को दो चार दिन रहना पड़ जाये तो उनकी राय बदल जायेगी |"(17) आज का कहानीकार ग्रामीण परिवेश और किसानों व कृषि के बारे में काफ़ी सजग दिखायी पड़ता है |

आलोचना साहित्य में ग्रामीण जीवन और कृषि :-

हिंदी साहित्य में आलोचना लेखन की परम्परा भारतेंदु युग से आरम्भ होती है | नामवर सिंह ने 'आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ' में लिखा है, "प्रगतिवाद का आरम्भ साहित्य में आर्थिक और राजनीतिक आंदोलन के रूप में हुआ | हिंदुस्तान की आजादी उस समय लेखकों की प्रमुख समस्या थी, इसके साथ ही वे किसानों मजदूरों की सुख-सुविधा के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लिए भी चिंतित थे |"(18) एक अन्य स्थल पर वे लिखते हैं "ग्राम्या इसी आत्म त्याग का पुण्य फल है जिसे उन्होंने चार वर्षों के कठिन आत्म बलिदान और अंत:संघर्ष के बाद प्राप्त किया | ग्राम्य प्रकृति एवं ग्राम्य नर-नारी के प्रति केवल 'बोद्धिक सहानुभूति' रखते हुए भी उन्होंने उनका मर्म बहुत कुछ पा लिया | हिमालय की प्रकृति के कवि ने गाँव की प्रकृति का जो रूप लोगों के सामने खड़ा किया, वही हिंदी काव्य के इतिहास में अभूतपूर्व था |"(19) "यहाँ उसे अनेक प्रकार के दृश्य देखने को मिलते हैं | कहीं चमारों, कहारों, धोबीयों का नाँच दिखायी पड़ता है तो कहीं 'ग्राम देवता' के सम्मुख उसका श्रद्धा समर्पित जीवन पड़ा मिलता है | अपने रास रंग में भी ये दलित किसान जीवन के वास्तविकता नहीं भूलते और जमींदार के कार्यों पर स्वांग भरते हुए टीका-टिप्पणी कर बैठते हैं |"(20)

उपरोक्त विधाओं के अतिरिक्त हिंदी साहित्य के प्रमुख निबंधकार बाल कृष्ण भट्ट ने ग्राम्य जीवन पर निबंध लिखे हैं | "मनुष्य के लिए ग्राम जीवन मानों प्रकृति देवी की शुद्ध प्राकृतिक अवस्था का आदर्श स्वरूप है | अर्थात् प्रकृति के साथ बनावट में जब तक बिल्कुल छेड़छाड़ नहीं किया उस दशा में प्रकृति देवी का कैसे स्वरूप रहता है | ग्राम्य जीवन में यह हमारे सामने आईना सा रख दिया गया है |"(21)

निष्कर्ष :-

साहित्य की सभी विधाओं में एक तरफ ग्रामीण जीवन के सौन्दर्य, हरे भरे खेत खलियान, नदियाँ, पेड़-पौधे, शीतल हवा, रीति रिवाज, पहनावा, सभ्यता, संस्कृति के दर्शन होते हैं वहीँ दूसरी और ग्रामीण जीवन का कटु यथार्थ जिसके अंतर्गत शोषित किसान, उसकी शोषणकारी प्रवृतियाँ, उसके शोषण में सहायक परम्पराओं, रीति-रिवाजों, समाज में गहरे तक पैठ बना चुकी जाति व्यवस्था की निंदा की है तो पद पद पर शोषित किसान जीवन के प्रति आत्मीयता और सम्मान भी दिखाया है |

भारत की आत्मा गाँवो में बसती है | भारत की संस्कृति और सभ्यता ग्रामीण संस्कृति है | ग्रामीण जीवन और कृषि का विकास किये बिना भारत का विकास करने की बात सोचना कोरी कल्पना है | ग्रामीण जीवन और कृषि के नसों को टटोलने के लिए हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकारों ने अपनी लेखनी इस पर चलायी है | हमारी अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि और किसान हैं | समकालीन साहित्यकार इसके प्रति बहुत सचेत हैं व इनकी समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान देकर हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे है |

संदर्भ सूची :-

1. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-44
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारणी सभा, पृष्ठ-292
3. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ-5,6
4. आँचलिकता और हिंदी उपन्यास- डॉ. नगीना जैन, पृष्ठ-104
5. हिंदी उपन्यास साहित्य का उद्भव व विकास- डॉ. लक्ष्मी कांत सिन्हा, पृष्ठ-47
6. रचनावली – शिव पूजन सहाय, पृष्ठ-415
7. हिंदी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ – डॉ. ज्ञान अस्थाना, पृष्ठ-162
8. हिंदी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ – डॉ. ज्ञान अस्थाना, पृष्ठ-198
9. हिंदी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृति – डॉ. कड़वे, पृष्ठ-235
10. मैला आँचल की भूमिका – फनीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ-2
11. हिंदी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ – डॉ. ज्ञान अस्थाना, पृष्ठ-235
12. आज का हिंदी उपन्यास – डॉ. इंद्र नाथ मदान, पृष्ठ-56
13. ग्राम्या-ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति और यथार्थ का वर्णन- त्रेमासिक ई-पत्रिका आरंभ
14. आधुनिक साहित्य चिंतन और कुछ विशिष्ट साहित्यकार – डॉ. नरेंद्र सिंह
15. राजस्थान साहित्य अकादमी-आलेख 'अनेकांत' – डॉ. दीपक पांडे
16. जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ – ग्राम
17. जूठन – ओम प्रकाश वाल्मीकि पृष्ठ-11
18. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ – नामवर सिंह, पृष्ठ-64
19. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ – नामवर सिंह, पृष्ठ-67
20. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ – नामवर सिंह, पृष्ठ-75
21. ग्राम्य जीवन – बाल कृष्ण भट्ट

RRIJM 2015, All Rights Reserved